जनसंपर्क कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

22 फरवरी 2024

प्रेस विज्ञप्ति

जामिया में "क्लाइमेट चेंज, डिजास्टर मैनेजमेंट एंड एनवायरमेंट सस्टेनेबिलिटी" पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन

जामिया मिल्लिया इस्लामिया के विज्ञान संकाय के भूगोल विभाग ने 21 और 22 फरवरी, 2024 को "क्लाइमेट चेंज, डिजास्टर मैनेजमेंट एंड एनवायरमेंट सस्टेनेबिलिटी" पर दो दिवसीय ऑनलाइन अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया।

भूगोल विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर हारून सज्जाद ने भारत और विदेश से आए विशिष्ट अतिथियों, अधिकारियों, प्रतिनिधियों, संकाय सदस्यों और शोधकर्ताओं का स्वागत किया। सम्मेलन की आयोजन सचिव प्रो. तरुणा बंसल ने सम्मेलन की विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत की। उन्होंने बताया कि 21वीं सदी की दुनिया में, चुनौतियाँ विभिन्न रूपों में उभर रही हैं, तत्काल कार्रवाई अनिवार्य है। जो सीमाओं को पार कर रही हैं और आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय क्षेत्रों को आपस में जोड़ रही हैं। ये चुनौतियाँ कमजोर समुदायों को गहराई से प्रभावित करती हैं, जिससे जलवायु संबंधी झटकों और आपदाओं के प्रति उनकी संवेदनशीलता बढ़ जाती है।

जामिया के कुलपति प्रोफेसर इकबाल हुसैन ने अपने उद्घाटन भाषण में इस बात पर प्रकाश डाला कि गर्मी अधिक आवृत्ति और तीव्रता से बढ़ रही है और मानव जीवन, आजीविका और इकोसिस्टम के लिए गंभीर खतरा पैदा कर रही है। जलवायु परिवर्तन के साथ जुड़े पर्यावरणीय क्षरण ने संकट को और बढ़ा दिया है और समाज को आपदाओं के प्रति संवेदनशील बना दिया है। जीवन का जटिल जाल जिस पर हम सभी निर्भर हैं, अभूतपूर्व तनाव का सामना कर रहा है। उन्होंने बताया कि शिक्षाविदों के रूप में; हमारी एक पवित्र जिम्मेदारी है - ज्ञान और कर्म के बीच के अंतर को पाटना। यह सम्मेलन उस जिम्मेदारी का प्रमाण है। उन्होंने कहा, यहां हम विचारों का आदान-प्रदान करने, समाधानों की रणनीति बनाने और आपदा जोखिम न्यूनीकरण में नवाचार को बढ़ावा देने के लिए दुनिया भर से विद्वानों, भूगोलवेत्ताओं और उत्साही प्रतिभाओं को एकत्रित करते हैं।

जहांगीर नगर विश्वविद्यालय, ढाका, बांग्लादेश से सम्मेलन के मुख्य वक्ता प्रो. (डॉ.) मोहम्मद नजरूल इस्लाम ने अपने मुख्य भाषण में आर्द्रभूमि से लेकर रेगिस्तान और जंगल तक विभिन्न इकोसिस्टम पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव पर प्रकाश डाला। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि जलवायु परिवर्तन, पर्यावरणीय स्थिरता और आपदा लचीलेपन से संबंधित गंभीर वैश्विक चुनौतियों पर अंतःविषय चर्चा और सहयोग से सतत विकास के लिए संभावित समाधान मिलेंगे।

एनसीडब्ल्यूईबी दिल्ली विश्वविद्यालय की निदेशक प्रोफेसर गीता भट्ट ने अपने संबोधन में जलवायु परिवर्तन के मुद्दों को प्राचीन भारतीय धार्मिक ग्रंथ से जोड़ा। पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार के सदस्य (तकनीकी), सीएक्यूएम, डॉ. एस.डी. अत्री, ने अपने संबोधन में कहा कि कैसे जल, वायु, बाढ़

और सूखे से संबंधित मुद्दे हर गुजरते साल के साथ आक्रामक होते जा रहे हैं। उन्होंने आगे कहा कि इन मुद्दों को अकादमिक और वैज्ञानिक स्वभाव के माध्यम से संबोधित करने की आवश्यकता है।

विज्ञान संकाय के डीन, प्रोफेसर तबरेज़ आलम खान ने बताया कि जलवायु परिवर्तन की वास्तविकता अब एक स्पष्ट शक्ति है जो हमारी दुनिया को नया आकार दे रही है। जलवायु परिवर्तन, एक ऐसी घटना जिसकी कोई सीमा नहीं है, आज हमारी दुनिया में एक निर्विवाद वास्तविकता बन गई है। वैज्ञानिक प्रमाण हैं कि हमारा ग्रह तेज़ी से गर्म हो रहा है, जिसका मुख्य कारण वनों की कटाई, औद्योगिकीकरण और जीवाश्म ईंधन जलाने जैसी मानवीय गतिविधियाँ हैं, उन्होंने कहा।

इससे पहले कार्यक्रम का संचालन सम्मेलन की आयोजन सचिव डॉ. अरुणा पारचा ने किया। सम्मेलन के सह-संयोजक प्रो. अतीकुर रहमान ने विशिष्ट अतिथियों, वक्ताओं, शोधकर्ताओं, प्रतिभागियों, शिक्षण और गैर-शिक्षण कर्मचारियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

जनसंपर्क कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया